ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

परिकल्पना

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

परिकल्पना

शोध या सर्वेक्षण को सत्य तक ले जाने के लिए परिकल्पना आवश्यक अंग है। परिकल्पना एक ऐसा आधार प्रस्तुत करती है जिसकी मदद से सत्य की खोज में आगे बढ़ा जा सकता है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ परि + कल्पना अर्थात चारों ओर एक सामान्य अनुमान। परिकल्पना को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न परिभाषाओं में परिभाषित किया है।

गुडे तथा हॉट महोदय के अनुसार – परिकल्पना सिद्धांत और अनुसंधान के बीच वह कड़ी है जो अतिरिक्त ज्ञान की खोज में सहायक होती है।

जी. ए. लुड्वर्ग के अनुसार - परिकल्पना एक काम चलाऊ सामान्यीकरण की प्रक्रिया है जिसकी सत्यता की परीक्षा अभी बाकी है। अपनी प्रारंभिक स्तर पर परिकल्पना एक अनुमान कल्पनात्मक विचार या पूर्वानुमान भी हो सकती है, जो बाद में किसी भी शोध का आधार बन जाती है।

परिकल्पना की विशेषताएं - प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिकल्पना को लेकर अपना कार्य करता है। गुडे तथा हॉट ने उपयोगी परिकल्पना की पांच विशेषताएं बताई हैं जो निम्नवत हैं –

1. स्पष्टता ,
2. अनुभव सिद्धता
3. विशिष्टता

4. उपलब्ध प्रविधियों से संबंध तथा
5. सिद्धांतों से संबंधित

1. **स्पष्टता** - अध्ययनकर्ता अपने अध्ययन के लिए जिस भी परिकल्पना का इस्तेमाल करता है उसकी भाषा एवं शब्दों में स्पष्टता होनी चाहिए।
2. **अनुभव सिद्धता -** परिकल्पना में अनुभवसिद्ध प्रमाणिकता का होना अत्यधिक आवश्यक है। यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित होना चाहिए ।
3. **विशिष्टता** - परिकल्पना सामान्य न होकर विशिष्ट होनी चाहिए । इसका निर्माण करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि परिकल्पना अध्ययन विषय के किसी विशेष पक्ष से ही संबंधित हो।
4. **उपलब्ध प्रविधियों से संबंध -** परिकल्पना का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसका उपलब्ध प्रविधियों द्वारा परीक्षण किया जा सके।
5. **सिद्धांतों से संबंधित -** परिकल्पना पहले प्रस्तुत किए गए सिद्धांत अथवा सिद्धांतों से संबंधित होना चाहिए । यदि कोई परिकल्पना किसी भी सिद्धांत से संबंधित नहीं होती तो उसकी सत्यता का पता लगाना कठिन हो जाता है।

परिकल्पना

परिकल्पना का महत्व :-

किसी भी अध्ययन को वैज्ञानिक बनानें में परिकल्पना की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है । यह एक प्रकार का प्रकाश स्तंभ है जो अध्ययनकर्ता का दिशा निर्देशन करती है तथा उसे व्यर्थ की सूचनाओं के संग्रह से रोकती है । परिकल्पना के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है :

1. **अध्ययन की दिशा का निर्धारण** - परिकल्पना की सहायता से जब अध्ययन को एक उचित दिशा मिल जाती है तो अध्ययनकर्ता भी व्यर्थ के परिश्रम, समय और व्यय से बच जाता है ।
2. **अध्ययन क्षेत्र को सीमित करने में सहायक** - परिकल्पना द्वारा अध्ययन क्षेत्र को इस प्रकार सीमित करना संभव हो जाता है कि अनुसंधानकर्ता अपना ध्यान अध्ययन के एक विशेष पहलू पर ही केंद्रित कर सके ।
3. **उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक** - किसी भी सामाजिक घटना अथवा समस्या का अध्ययन करते समय अध्ययनकर्ता के सामने अनेक तथ्य आते हैं । परिकल्पना के सहायता से यह निश्चित करना आसान हो जाता है कि किन तथ्यों को एकत्रित किया जाए और किन तथ्यों को छोड़ा जाए ।

परिकल्पना के प्रकार :

परिकल्पनाओं का कोई भी निश्चित वर्गीकरण कर सकना एक कठिन कार्य है। वास्तव में इसका अध्ययन विषय से घनिष्ठ संबंध होता है। यह विशेषतया दो प्रकार की होती हैं

1. शैक्षिक परिकल्पना
2. सांख्यिकीय परिकल्पना

1. **शैक्षिक परिकल्पना** : शैक्षिक परिकल्पना ऐसे किसी संबंध अथवा अंतर से संबंधित होता है जो शोधकर्ता वास्तविक संसार में पाने की संभावना रख सकते है।
2. **सांख्यिकीय परिकल्पना** : सांख्यिकीय परिकल्पना एक सांख्यिकीय विधि होती है। बहुधा शैक्षिक विधि का परीक्षण करने के लिए पहले उसे सांख्यिकीय परिकल्पना के रूप में ही अभिव्यक्त करते हैं।

उपयुक्त संपूर्ण विवेचन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक अध्ययनों में परिकल्पना का अत्यधिक महत्व है। परिकल्पना की सीमाएं केवल इस तथ्य को स्पष्ट करती हैं कि परिकल्पना का निर्माण बहुत सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। परिकल्पना शोधकर्ता पर नियंत्रण ही नहीं रखती बल्कि अध्ययन अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।